रूप में कोई भी समतावादी दावा ही क्यों न हो। विरोध, प्राधिकरण अथवा राज्य
कार्रवाई हेतु किसी मनुष्य अथवा व्यक्तियों के समूह के माध्यम से असंतोष या आप
प्रदर्शित करने की एक विधि है। सामान्यतः यह शक्तिशाली होने से पूर्व शक्तिहीन, क्र
एवं अस्वीकृति की अभिव्यक्ति है। किसी प्रकार का विरोध करने या अवरोध उत्पन्न क
का कार्य करना ही प्रतिरोध है। प्रतिरोध शब्द का तात्पर्य किसी चीज को झेलने की शक्ति
के भाव से है। महात्मा गांधी ने प्रतिरोध को एक विधि के रूप में परिभाषित किया औ
पूर्व–स्वतंत्र भारत में अनेक सरकारी नीतियों के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध का उपयो
किया था। प्रायः प्रतिरोध सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक वर्चस्व के विरूद्ध प्रगट होत
है। शक्ति के वैकल्पिक रूपों को उत्पन्न करने हेतु प्रतिरोध व्यक्तिगत तथा सामूहिक विष
की क्षमता को प्रदर्शित करता है, जो कि प्रचलित संरचना से अलग हैं।

हम आर्थिक सामाजिक एवं राजनीतिक, संरचना के विरोध को विभिन्न विकल्पों के रूप
दिखाते हैं। तत्कालीन ब्रिटिश सरकार की आर्थिक नीतियों के द्वारा व्यक्त किए ग
उपभोक्तावाद के प्रति महात्मा गांधी ने अपने प्रतिरोध को प्रदर्शित करने हेतु एक धोती पहन
थी। आधुनिक शिक्षित महिलाएं हमारे समाज में पितृसत्ता के प्रतिरोध हेतु निशान के रूप
सिंदूर अथवा कंगन धारण नहीं करती हैं। प्रतिरोध का रूप सामूहिक अथवा व्यक्तिगत, प्रत्यक्ष
या गुप्त हो सकता है। प्रतिरोध के प्रासंगिक एवं सार्वभौमिक दो मूल नियमन हैं। प्रतिरोध क
जिस प्रकार से दिखाया जाता है एवं प्रासंगिक पहलुओ को जिस रूप में माना जाता है
उससे किसी प्रकार का कोई फर्क नहीं पड़ता है। तथ्य यह है कि प्रतिरोध अन्याय, शोषण
एवं प्रभुत्व के विरूद्ध करते हैं, जिससे इसके सार्वभौमिक आयाम को स्वीकार किया ज
सकता है। प्रतिरोध किसी भी प्रकार के अभ्यास के रूप में देखा जा सकता है जो सामाजिक
सम्बन्धों, प्रक्रियाओं अथवा संस्थानों से जुड़ी विशिष्ट परिस्थितियों को चुनौती देने, परिवर्तित
करने या बनाए रखने हेतु प्रयत्न करता है। ऐसी परिस्थितियों में शोषण, वर्चस्व, सामग्री पर
अधीनता, प्रतीकात्मक अथवा मनोवैज्ञानिक स्तर को सम्मिलित किया जा सकता हैं।

विरोध एवं प्रतिरोध के विपरीत, आंदोलनों को सामूहिक कार्रवाई की निरंतर एवं लंबी
अवधि की आवश्यकता होती है। विरोध स्वतः स्फूर्त होते हुए सामान्यतः तत्काल आवश्यक
मुद्दों को हल करने की इच्छा रखते है। जैसे जब छात्र एकत्र हो कर एक ऐसे वाहन
चालक के विषय में पूछताछ करते हैं जिसकी वाहन चलाने की लापरवाही के कारण
विश्वविद्यालय में उनके किसी मित्र छात्र की मौत हो गई हो। विरोध तथा प्रतिरोध प्राय
अव्यवस्थित हो सकते हैं किन्तु आंदोलनों को सामूहिक कार्रवाई के एक संगठित एव
समन्वित रूप की आवश्यकता होती है। प्रायः आंदोलन राज्य नीति में बदलाव के द्वारा
एक बड़े सामाजिक अथवा राजनीतिक लक्ष्य को पूर्ण करने की दिशा में उन्मुख होते है।

2.1.2. प्रतिरोध के लक्षण / गुण (Attributes of Resistance)

प्रतिरोध के लक्षण अथवा गुण निम्नलिखित है–

1) **अभिनेता (Actors)**–संगठित प्रतिरोध में व्यक्तिगत और संभावित प्रतिभागी, साथ ही
बाहरी योगदानकर्ता और या तो प्रतिस्पर्धा करने वाले या सहयोग करने वाले प्रतिरोध
समूह शामिल होते हैं।

2) **कारण (Causes)**–प्रतिरोध के लिए सामूहिक रूप से स्पष्ट तर्क और भागीदारी के
लिए व्यक्तिगत प्रेरणाएँ होनी चाहिए।

3) **पर्यावरण (Environment)**–राजनीतिक, सामाजिक, भौतिक या पारस्परिक संदर्भों में
पहले से मौजूद और उभरती स्थितियाँ जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रतिरोध को
संगठित करने में सक्षम या बाधित करती है।

इकाई–2

प्रतिरोध, गतिशीलता एवं परिवर्तन
RESISTANCE, MOBILIZATION AND CHANGE

2.1. प्रतिरोध (RESISTANCE)

2.1.1. प्रतिरोध का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Resistance)

सामाजिक प्रतिरोध एक सामाजिक घटना के रूप में है जिसके अन्तर्गत सांस्कृतिक प्रथाओं, राष्ट्र–राज्यों, सामाजिक संस्थानों, सामाजिक संगठनों एवं परंपराओं के माध्यम से निर्मित वर्चस्ववादी प्रथाओं का विरोध वंचित, शोषित तथा वर्चस्व वाले समूहों द्वारा किया जाता हैं। प्रतिरोध लोगों के व्यक्तिगत अत्यन्त निचले स्तर से विरोध के उच्चतम स्तर तक हो सकता है।वर्चस्व के विरुद्ध संघर्ष हमेशा सामाजिक प्रतिरोध के विभिन्न रूपों के माध्यम से होते रहते हैं। इस विषय में ब्रिटिश सामाजिक सिद्धांतकार रॉबिन विलियम्स ने बल देते हुए 1977 में कहा, प्रभुत्व "केवल निष्क्रिय रूप से अस्तित्व में नहीं है... इसे लगातार नवीनीकृत, पुनर्निर्मित, बचाव और संशोधित किया जाना है। इसका लगातार विरोध किया जाता है, सीमित किया जाता है, बदला जाता है, ऐसे दबावों द्वारा चुनौती दी जाती है जो उसके अपने बिल्कुल भी नहीं होते।"

प्रतिरोध की संकल्पना समाजशास्त्रीय साहित्य के अन्तर्गत अधिक विस्तृत रूप से की गई है। 2004 में हॉलैंडर एवं ईनवोहनर ने सैकड़ों की संख्या में लेखों की समीक्षा करके एवं विद्वानों के द्वारा प्रतिरोध को परिभाषित करने के विभिन्न तरीकों को देखते हुए दो आधारभूत आवश्यक तत्व कार्रवाई और विरोध को प्रस्तुत करते हुए प्रतिरोध को परिभाषित किया हैं। कार्रवाई कोई प्रतिरोध, गुण अथवा स्थिति नहीं है बल्कि यह विरोध में किया गया एक सक्रिय व्यवहार है। उपरी तौर पर विरोध का तात्पर्य ऐसे किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के खिलाफ प्रतिरोध करना है जिसे अन्यायपूर्ण माना जाता हो। अन्य शब्दों में कहा जाए तो विरोध मुख्यतः संस्कृति से विचलन की डिग्री है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इन आधारभूत समानताओं के कारण विभिन्न विद्वान व्यवहार की एक विस्तृत श्रृंखला हेतु प्रतिरोध लागू करते हैं किन्तु अनेक विद्वान इस विचार से सहमत नहीं है कि किस प्रतिरोधी हद तक व्यक्तियों को स्वयं को प्रतिरोधी के रूप में देखना चाहिए। सार्वजनिक मान्यता की प्रासंगिकता भी अभी स्पष्ट नहीं है। इस बात पर विद्वानों की विभिन्न राय है कि जिन प्रतिरोधी कार्यो पर कोई ध्यान नहीं देता उन्हें अभी भी प्रतिरोध माना जाता है।

मानव समाज में प्रतिरोध सार्वभौमिक एवं स्वाभाविक है। मनुष्य समाज, समय एवं स्थान पर अनेक कारणों से इसके आन्तरिक मतभेदों तथा संघर्षों को देखता है। अनेक कारणों से यह पता चलता है कि किसी समाज में सभी वर्गों को प्रमुख रूप से प्रायः आयोजित मान्यताओं, मानदंडों एवं रीति–रिवाजों के साथ समान रूप से समझना सरल नहीं है, चाहे वह किसी